कविता

(भोजपुरी कविता के पहिल त्रैमासिक)

7

सम्पादक : जगन्नाथ

कविता

(भोजपुरी कविता के पहिल त्रैमासिक)

वर्ष-2 अंक-3 जनवरी, 2001

सम्पादक : जगन्नाथ

सह-सम्पादक : भगवती प्रसाद द्विवेदी

प्रबन्ध : श्रवण कुमार

चित्रसज्जा : संगीता सिन्हा

सम्पादकीय सम्पर्क : श्याम भवन, एस॰ पी॰ सिन्हा पथ,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800 001

प्रकाशक : भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान
श्याम भवन, एस॰ पी॰ सिन्हा पथ
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800 001

सहयोग राशि : एह अंक के 6 रुपया
वार्षिक 20 रुपया
आजीवन 251 रुपया

(सहयोग-राशि सम्पादक का नाँव से सम्पादकीय सम्पर्क पर देय)

●

सम्पादन-संचालन : अवैतनिक-अव्यावसायिक

रचना खातिर एकमात्र रचनाकार जिम्मेवार । भाव, विचार भा कवनो स्तर पर ओह से 'कविता' परिवार के सहमति कतई जरूरी नइखे ।

●

'कविता' परिवार का ओर से अपना नेही-छोही सिरजनहार, पाठक आ शुभचिन्तक लोग के नया साल अउर नयकी सहस्राब्दी के दिली मुबारकबाद !

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादक के पन्ना

आज के गद्यात्मक युग में कविता के, छंद का बंधन से विमुक्त करे के अनवरत प्रयास जारी बा, बाकिर छंद के प्रचलन अबहियो कम नइखे भइल आ साइत आवेवाला समयो में नाहिये कम होई । भारतीय काव्य में छंदमुक्त रचना के सर्वाधिक जोर हिन्दी में बा, जहाँ छांदिक रचनन के प्रति एक तरह से घोषित विद्रोह बा, बाकिर तबो गीत आ गजल उहँवों प्रचुर मात्रा में लिखा रहल बा । दरअसल, प्रारंभ से ही कविता छान्दिक परिधान में देखाई देत आ रहल बा । एह परिधान के सहजे उतार फेंकल संभव नइखे । अइसन नइखे कि छंद के बिना कविता ना हो सके । छंद के बिना भी नीमन कविता भइल बा आ हो रहल बा । छंद त कविता खातिर साधनमात्र ह, साध्य ना । खाली छंद से ही कविता ना हो सके, बाकिर एह तथ्य के नकारल ना जा सके कि एह साधन से सम्पन्न कविता के रंग आ मनोहारिता कुछ अउर होला । छंद कविता के लयमान बनावेला, ओकरा प्रेषणीयता आ प्रभविष्णुता के काफी हद तक बढ़ावेला । साधारण लोग के आकर्षण हमेसा से छान्दिक रचनन के प्रति ही रहल बा आ रही भी ।

भोजपुरी में छंदमुक्त आ छांदिक- दूनो तरह के रचना हो रहल बा । एक-दोसरा के प्रति नकारात्मकता के स्थिति अभी तक इहवाँ नइखे आइल । दूनो तरह के लेखन हो रहल बा आ समादर पा रहल बा । भोजपुरी कविता खातिर ई बड़ा शुभ बा । खाली, अतने भर ख्याल राखत चले के बा कि कविता चाहे जवना रूप में लिखाय, कविता होखे । हर पद्य आ हर छन्दमुक्त रचना कविता कहाये के अधिकारी ना होखे ।

श्रद्धांजलि

भोजपुरी के अप्रतिम गीतकार, 'बयार पुरवइया', 'अँजुरी भर मोती' आ 'लोकरागिनी' अस चर्चित-प्रशंसित काव्य-पुस्तकन के प्रणेता तथा भोजपुरी साहित्य के प्रचार-प्रसार खातिर समय-समय पर सम्पन्न अनेक आयोजनन के सूत्रधार रहल भोलानाथ गहमरी अब ना रहलन । गाजीपुर में 8 दिसम्बर, 2000 के उनकर देहान्त हो गइल । गहमरीजी अपना अनुभूति आ चिन्तना के प्रस्तुति मूलतः भोजपुरी गीत आ नवगीत के माध्यम से ही कइले बाड़न । उनका निधन से भोजपुरी काव्य के जे क्षति भइल बा, ऊ अपूरणीय बा । दिवंगत रचनाकार के प्रति 'कविता' परिवार के विनम्र श्रद्धांजलि !

www.bhojpurisahityangan.com

तर्पण

वेदनन्दन के एगो गीत

जनम : 23 दिसम्बर, 1924 । निधन : 22 जनवरी, 1996 । हिन्दी-भोजपुरी के चर्चित कवि । कवि के व्यक्तित्व-कृतित्व पर 'वेदनन्दन समग्र' सन 2000 ई॰ में प्रकाशित ।

समय के दिआरा

बालू के मछरी पकाव गोइयाँ
हो पकाव गोइयाँ
कि नगरी में रेत दरिआव पइसल

घरे-घरे लोग अब अजगुत जगावे
खनहन अन्हरिया में मटकी चलावे
धरती के फाँड़ा प बाँझिन के पहरा
फतुही से लंका जराव गोइयाँ
हो जराव गोइयाँ
कि सावन में खेत के हिआव सिहकल

गोरगार पइसा के छुछुमाही बेटी
माटी के बेटा के फोरे नरेटी
पोर-पोर बिखइन के तड़के तमाशा
चुरइल के चान चटकाव गोइयाँ
चटकाव गोइयाँ
कि असरा के सुघर बनाव बिगरल

कुरसी के तरे घाम अगजग अन्हारा
लउकेला आन्हर के सउँसे नजारा
अब त जिनिगिये बा मउअत के खेती
जुलुमी के लुगरी बनाव गोइयाँ
हो बनाव गोइयाँ
कि भोरहरिये सूरुज के पाँव थथमल ।

(प्रस्तुति : रामनिहाल गुंजन)

www.bhojpurisahityangan.com

अशोक द्विवेदी के दू गो गीत

[एक]

सदियन के झगरा बा
जुग-जुग ले जाई !
होत बा अन्हार से
अँजोर के लड़ाई !

एह घरी हज़ार रूप में
अन्हार बाटे
रोसनी के रथ पर
कसि के सवार बाटे
झूठ-साँच के अंतर
समझ में न आई !

जगर-मगर में आन्हर
आँखि बा, शहर में
बढ़ियाइल बा अनेति
दिने-दूपहर में
सोने का लंका के
आजु के जराई ?

छपले आवे अन्हार के
सेना भारी
लड़ी का सलाई के
काठी बेचारी
तेल बा त बाती ना
का जरी बुताई ?

ना पूरे साध
ना फुलाय कबो सपना
रोज के ओरहना
आ हर घड़ी खोबसना
छिन में लउके परबत
अगिला छिन खाई !

बाढ़ हो कि सूखा
ओला गिरल कि पाला
हुलसि के हराई में
प्रान बो दियाला
उगि जाला ओही में
हरियर बिरवाई !

आँतर में सरधा के
भरल जोर बाटे
नेह के गंगाजल
सत के अँजोर बाटे
कहियो तऽ उकठल ई
फेंड़ हरियराई !

होत बा अन्हार से
अँजोर के लड़ाई !

✪

www.bhojpurisahityangan.com

[दू]

लहरे फसिलिया
पहिरि गहना !

सोनरंग बलिया झपर-झप डोले
जाँतल हिया के, सखी, बान्ह खोले
बहुते दिनन पर
हँसल सजना !
मोर लहरे फसिलिया .....

पौरुख-पसेवा के लउकल कमाई
लरिकन के दूध-भात चिउरा भेंटाई
हमरा के चाहीं
चटक तियना
मोर लहरे फसिलिया .....

फिरु भरी धनवा से कोठिला-बखारी
उखिया उतारी मोर कर्जा-उधारी
चनवाँ चननिया
चनन-अँगना !
मोर लहरे फसिलिया .....

बजड़ा बेंचाई त कम्मर लियाई
सासु आ ननद जी के लुग्गा किनाई
पुछिहें जो हमसे,
कहबि कुछु ना !
मोर लहरे फसिलिया .....

हमरा के चाहीं बस उनकर सनेहिया
भर आँखि देखते, फुलाइ जाला देहिया
फुर होइ जाला
सुघर सपना !
मोर लहरे फसिलिया .....

✪

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' के दूगो गजल

[एक]

जाल में मीन के फँसल देखीं
गाँव में मौत के हँसल देखीं

लोग गंगा नहा के आइल हऽ
पाँक में फेरु बा धँसल देखीं

साँप छपिटा के मर गइल आखिर
आदमी के ह ई डँसल देखीं

बाग में बा बहार के जलवा
फूल में आग बा खँसल देखीं

[दू]

चलन शहर में पत्थरन के ना अगर होइत
त काँच के ना टूटला के, यार, डर होइत

बयार थाकि जात पीटि के बा दरवाजा
तनिक जे शोर के उहों प कुछ असर होइत

हरेक मोड़ पर त भेंट बा अन्हारा से
कहीं सफर में, यार, रोशनी के घर होइत

अएब त दोसरा में ढेर निहरलीं रउरा
कबो त खुद के रूप पर गइल नजर होइत

लुटित 'पीयूष' संपदा ना पुरनिया सभ के
अगर ना लोग ओकरा से बेखबर होइत

✪

www.bhojpurisahityangan.com

बलभद्र
के एगो कविता

शब्द

जइसे आकासे खिल जाले चील
झपट्टा मारेला बाज
चीं-चीं मचि जाला सगरो गोहार
खेत में पाहि के पाहि झूमेला गेहुम
थाक के थाक बाल
जवानी जइसे फड़केले
फड़केला शब्द

पी ! पी ! पपीहरा के
खूँटा तुरा के माकत बछरू के हँफनी
धूर में माटी में सरकत
जनमतुआ के लार-पोटा
माई के टिटकारी
रसोइया घर के घेरा से
बहरी आवत गीत
अपना रंग में जिए के
आदमी का मन के उछाह
जहाँ से खाड़ होला शब्द

हजार-हजार फूलन के भेस में
मुसकाले धरती
मुसकालें स शब्द

जीवन आ शब्दन के आपस के मेल
निशाना प रहल बा ओकनी के
ओकनी के कोशिश कि
हाजिरी देवे, हाथ जोड़े
शब्द रहे साँसत में

✪

रिपुंजय निशान्त
के एगो गीत

समय के मछुआरा

छल के बंसी फेंके
खींचे धीरे-धीरे डोर
समय के मछुआरा !

पानी में निर्भय हो घूमे
टोली हर मछरी के
फँस जाई बंसी ना चीन्ही
रेहू आ सिधरी के
चारा के लालच दे-दे के
कर दीही कमजोर
समय के मछुआरा !

बइठल बा टकटकी लगा के
डूबी जब कँवड़ेरा
पानी में हलचल हो जाई
उठ जाई बँवड़ेरा
छीप पकड़ झटका दे मारी
दया-मया सब भोर
समय के मछुआरा !

रो-रो ताल भीतरे-भीतर
डूबल शोक लहर में
आपन दर्द कहे केकरा से
भुतहा छूँछ चँवर में
नाता तूर छोड़ चल देला
जाने कवना ओर
समय के मछुआरा !

✪

www.bhojpurisahityangan.com

जितेन्द्र कुमार के एगो कविता

एकइसवीं सदी के स्वागत-गान

नीला बोतल में बंद
नारियल तेल से सँवारल
शैम्पू से धोवल
हवा में लहरात रेशमी बार
आलिंगन खातिर इशारा करत
कोमल उघार बाँह,
गरीबी रेखा का नीचे जीयत
धूल में लिथड़ल लइकन का लोर के
विकल्प ना हो सके ।

डिटर्जेंट का करिश्मा के बखान करत
ऊ सुंदरी बार-बार आवेली रेशमी परदा प
जेकरा अँगुरियन के पोर
अतना नाजुक बड़ुए कि
डिटर्जेंट से कपड़ा धोवे खातिर
एकदमे नाकाबिल हउए ।

कोमल आ चिकन डिटर्जेंट छू लेवे भरसे
फच्-फच् खून फेंकेवाली अँगुरियन के उपयोग
खाली रंगीन परदे प हउए ।

श्रम के अभाव में
रेशम लेखा मोलायम बनावल देह
फल-फूल लागे खातिर
सर्वथा अनुपयुक्त हउए
टूथ-पेस्ट के सुरक्षा-चक्र से
सुरक्षित मोती के दाना लेखा
दंत-पंक्तियन के धवलता में
सिलिक साड़ियन का आँचर के
लहरदार बोलावा में
विष भरल हउए ।

आँखियन का राह से
ढुकावल जाता
उन्मादी विष
मैथुन खातिर काँच लइका
काम-मुद्रा में
आलिंगनबद्ध हो जा ताड़न स

विवस्त्र कदली जाँघन का नीचे
नाभियन का गहराइन में
नवजात पुत्रन का दुग्धपान खातिर
बेकार भइल लौहसख उरोजन का नीचे
दबा के राखल चाह ताड़ी स
पूरा विश्व के
पूँजी के विषकन्या ।

नाट्य मंच का पीछे से
रेशम के महीन डोरी से
बान्हल कठपुतलियन के
नचावता
सूत्रधार !

कृत्रिम सौंदर्य के आग में
मछली अस भुँजाता
देश के इच्छा-शक्ति

साबुन के झाग में
पहाड़ से गिरत श्वेत जलधार का सामने
पथरीली नदी का बीच में
मेघ में परिणत उछलत जल का छाया में
उन्मादी अट्टहास का साथ
गोर-गोर बाँह
एकइसवीं सदी के आगमन के
स्वागत-गान गावत बाड़ी सन ।

✪

www.bhojpurisahityangan.com

जीतेन्द्र वर्मा
के एगो कविता
मन करेला

सबेरे-सबेरे बिछवना पर उँघात
बड़ी मन करेला
कि तनी सुनितीं
कउवा के बोली ।

गाँवें कउवे के काँव-काँव
सुन के टूटत रहे नींद
जब नाहिंयो उठे के मन करे
तबो, काँव-काँव के मारे
अकुता जाइ मन
ना सूतल बने, ना जागल
हार के उठहीं के पड़े ।

एहिजा त
तनी अन्हारे से सुनाए लागेला
गाड़ी-घोड़ा, कल-करखाना के
हाँव-हाँव, पों-पों, घर्र-घर्र
कतनो बंद करीं जँगला-केवाड़ी
बाकिर ओकर आइल ना रुके
नींद टूटला के बावजूद
कउवा के काँव-काँव के बिना
बुझाला कि
अबहीं सबेर होखे में देर बा ।

ई याद क के कि
ई त महानगरी हवे
एहिजा ना सुनाई काँव-काँव
जनाला, जइसे कुछ भुला गइल होखे ।
कुछ उदास, कुछ खाली-खाली
कुछ अधूरा लागेला मन
बुझाला कि
अबहीं सबेर होखे में देर बा ।
मन करेला, हम बिछावना पर
रहितीं तनी जागल, तनी सूतल
तले बोलित कउवा काँव-काँव
हम उठितीं हड़बड़ाइले
कि हो गइल सबेर !

✪

ललन प्रसाद पाण्डेय
के एगो कविता
अपना संस्कृति .....

अपना संस्कृति, संस्कार
अउर परम्परा के
धरोहर बा ऊहे लोग
जे थमले बा
धरती मइया के अँचरा
कुदरत के कोरा में
शीत-घाम लोढ़त
बरखा से भींजत
माटी में लोट-पोट होत ।
माटी के मोल समुझेवाला ह उहे लोग
जेकरा के नयकी शिक्षा में शिक्षित
आकाश में उड़ेवाला
पच्छिमी सभ्यता में रंगाइल
मारबल पर बिछिलाए वाला लोग
दू कउड़ी के बनाके
आधुनिकता के तरजूई पर तउलत बा
आ विश्व बाजार में
डॉलर के मोल लगावत
अपना संस्कार-संस्कृति के बेपार करत बा ।

✪

www.bhojpurisahityangan.com

मुफलिस के एगो गजल

नीक बनले बिपतिया के घर हो गइल
आज जिनिगी जिअल बा जहर हो गइल

प्यार दिहलीं त हमरा मिलल दुश्मनी
ना बुझाइल कहाँ, का कसर हो गइल

लोग सुख से जिये, हम त चहलीं इहे
टेढ़ हमरे प सभ के नजर हो गइल

आदमी घर के अपने सतवलन बहुत
कुल्हि भलाई कइल बेअसर हो गइल

जेकरा खातिर जवानी बेपानी भइल
जिन्दगानी का ओकरे से डर हो गइल

लोग ईमान धो-धो के दमगर बनल
सबसे ईमानवाला लचर हो गइल

जान 'मुफ़लिस' के दुनिया में कइसे बँची
खुद के साँसन से बा अब त डर हो गइल

✪

ए० कुमार 'आँसू' के एगो गजल

फूल में महक नइखे
बाग में चहक नइखे

नेह के मरम समझो
लोग में ललक नइखे

खुद के भी ठगे में अब
लोग का झिझक नइखे

जे कहात बा आपन
ओकरो प हक नइखे

के तरे कहीं, 'आँसू'
काँट के कसक नइखे

✪

मनोज कुमार सिंह 'भावुक' के एगो गीत

बाँझ हो गइल बा, संवेदना के गाँव
नेह हो गइल बा, बबूरवा के छाँव

प्यार-प्रीत के जमीन रेह हो गइल बा
आत्मा मरल, मशीन देह हो गइल बा
लेत बा ना केहू इन्सानियत के नाँव
बाँझ हो गइल बा, संवेदना के गाँव

करे जे अगोरिया से चोर हो गइल बा
देश पर लुटेरवन के जोर हो गइल बा
कोरा का लइका के जाई केने पाँव ?
बाँझ हो गइल बा, संवेदना के गाँव

टुकी-टुकी गाँव भइल, टुकी-टुकी घरवा
घरवो में घरवा आ ओहू में दररवा
'भावुक' जिनिगिया ई लागी कवना ठाँव?
बाँझ हो गइल बा, संवेदना के गाँव

✪

www.bhojpurisahityangan.com

कन्हैया पाण्डेय के एगो कविता

घुन

खा गइल पूरा अनाज बखारि के
भीतरे-भीतर घुन
लटकत रह गइल ताला
जोगावत रह गइल माई
सहेजल-सँवारल पुरुखन के थाती
चाकिर
ना मनले स घुन खाये से
प्रेम आ सौहार्द के अनाज
पीए से नेह के गंगा
आ बनावे से आदमीयत के खोंखड़ ।
खोजत रह गइल
देश-प्रदेश के पूरा फउज
हिमालय से कन्याकुमारी ले
पंजाब से काश्मीर ले
लेकिन
पकड़इलें स ना
ना भेटइलें स
ना छोड़लन स आपन आदत
ना लागल उन्हन पर कवनो अंकुश ।
ऊ आजुओ घूमऽ तारे स
बेरोक-टोक सगरे
आ खात बाड़े स
आदमीयत के दाना
पीयतारे स सनेह के पानी
बनावतारे स
देश आ प्रदेश के खोंखड़ ।

✪

श्रीराम सिंह 'उदय' के व्यंग्य कविता / मुक्तक

चकमा

गरीबी हटावे के प्रलोभन
जइसे
लइकन के फुसलावे के पिपिहिरी ।
मंत्री जी के भाषण-आश्वासन
जइसे
सौर-मंडल के
टाँगन पर उठावे चललि टिटिहिरी ।

मुक्तक

: 1 :

नाटक के मंचन पर बूढ़ भा जवान का ?
अभिनय के स्वाँग रचत, मानव-शैतान का ?
जबले मुखौटा उतारल ना जाई त ऽ
असली आ नकली के होई पहचान का ?

: 2 :

तदबीर ना रही, तऽ तकदीर से का होई ?
जो प्रेम के ना बन्धन, जंजीर से का होई ?
जवना के जिन्दगी में पावे के आस नइखे
तू ही बताव, ओकरा तसवीर से का होई ?

: 3 :

तपत दुपहरी में हम नंगे पाँव
चलत जात बानी अविरल बिन छाँव
मंजिल खातिर भटकत बानी रोज
छूटल आपन दूर पुराना गाँव

✪

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकाश उदय के एगो गीत

लागे जनि जिनिगी भ खाती

लागि जाला कवनो-कवनो बात
केहू-केहू के ।
सूति जाला दिन
पल-छिन हो पहाड़ केहू-केहू के ।
जागि जाला कवनो-कवनो रात
केहू-केहू के ।

"खाब जो त गेहूँ—
ना त रहि जाइब एहूँ" — सेहू-सेहू के
पसरेला कबो-कबो हाथ, केहू-केहू के—
आगे, जनि हँसि द हठात, एहू-एहू से
लागि जाला कवनो-कवनो बात
केहू-केहू के ।

बतिया लगलका कहलका न माने राम केहू के
जोहि लेला जौने-तौने घात — जेहू-तेहू से
लागि जब जाला कवनो बात
जा के केहू के ।

लागेला त लागी
केहू कतना ले बाँची ! बाकी केहू के
लागे जनि जिनिगी भ खाती, लागे फेरु से
लागि जाला भूख जइसे लागेला पियास फेरु-फेरु से
लागे जो त लागे कवनो बात
केहू-केहू के ।

✪

शारदानंद प्रसाद के कविता

: 1 :

लोग
खैनी नियर
फूँक के
उड़ा दिहल जाता
बाकिर
खैरा पीपर
डोले के नाँव नइखे लेत ।

: 2 :

बड़ा टान बा
संवेदना के ।
हाट-बाजार
कवनो गली-खुँची
कतहीं लउके त
मोलवले अइह ।

: 3 :

बैतलवा फेर
बइठ गइल
गाछ पर
विक्रमादित
ताकते रह गइले ।
जम के छुअला के
डर ना ह
डर ह परिकला के ।

✪

www.bhojpurisahityangan.com

एह अंक के खास कवि : तैयब हुसैन 'पीड़ित'

विचारपरकता आ रचनात्मक धार के कवि

भगवती प्रसाद द्विवेदी

लोकोन्मुखता आ लोकधुन भोजपुरी कविता के खासियत रहल बा । इहे कारन बा जे भोजपुरी कविता पाठ्य कम, श्रव्य ज्यादा रहल बाड़ी स । हिन्दी अउर दोसर भाषा में एकरे अभाव से समकालीन कविता पर सवालिया अँगुरी उठावल जा रहल बा । बाकिर, इहो कहनाम सोरहो आना साँच बा जे खाली लोक, लोकरागात्मकता आ सपाटबयानी से कवनो कविता के उत्कृष्टता हासिल ना होला, जबले ओह में समकालीनता, विचारपरकता आ काव्य-तत्वन के उचित अनुपात में इस्तेमाल ना होखे । कविता में सभे किछु खुलासा ना कके, किछु देखावल जाला त बहुत किछु छिपावलो जाला आ ओकरा खातिर माफिक बिम्ब-प्रतीकन के इस्तेमाल जरूरी होला । ई सुखद स्थिति बा कि भोजपुरी कविता में किछु सिरजनहार अइसनो बाड़न, जे लोकोन्मुखता, लोकरागात्मकता का संगही विचारपरकता आ काव्य-तत्वन से लैस होके महत्वपूर्ण सिरजन कर रहल बाड़न अउर परम्परा-आधुनिकता के बीच सेतुबद्धता कायम करत, बनल-बनावल लीक से अलगा हटिके समय-संदर्भ के सार्थक काव्यात्मक अभिव्यक्ति देत बाड़न । 'बिछउतिया' a s० तैय्यब हुसैन 'पीड़ित' अइसने रचनिहारन में एक बाड़न, जिन्हिकर पाँच गो कविता आ एगो गीत खास चरचा के माँग करत बाड़न स ।

कवि 'पीड़ित' के रचना के मूल में समाज के उत्पीड़ित सबसे निचला तबका के तबाही बा, बस्ता के बेसम्हार बोझा से दबाइल सर्वाधिक उपेक्षित लोग होत बचपन बा आ बा अपसंस्कृति, अंतर्विरोध, तंगहाली । सोच, समझ आ संवेदना के स्तर पर कवि का लगे पोढ़ जीवन-दृष्टि बा । हर कविता के अंत ओह बिन्दु पर जाके होत बा, जहवाँ से चिन्ता आ चिन्तन के प्रक्रिया शुरू होत बा आ पाठक गहिर संवेदना में ऊभ-चूभ होत सोचे-विचारे खातिर अलचार हो जात बा ।

पहिलकी कविता **'का अब'** में तथाकथित आधुनिक समाज के भयावह आ दारुण चित्र जियतार ढंग से उकेरल गइल बा । प्रदूषित जिनिगी, अनैतिक राजपाट, कृत्रिम दिनचर्या आ बेबस लरिकाई ! भला केकरा फुरसत बा समाज के रीढ़ के हाड़ मेहनतकशन के खून-पसेना के पहिचाने के– **'का काल्ह केहू समझी / एतना बड़ धरती के / उपजाऊ बनावे में / अदना केंचुआ के मेहनत / अकिल के समुन्दर में / बून-भर सियाही के बिसात ?'**

दोसरकी कविता **'का करीं'** में दुनिया-जहान के अमानुषिक बर्बरता, पथराइल जिनिगी आ पत्थरदिल-चेतनाशून्य लोगन के बीच कोमल भावना आ संवेदनशीलता के अहमियत पर सवाल

www.bhojpurisahityangan.com

ठाढ़ कइल गइल बा— **'जबकि / ऊब मेटावे खातिर / हो रहल बा हत्या / मनोरंजन बदे बलात्कार .... अइसना में सोचऽ तानी / अपना प्रेम-पत्र के का करीं ?'**

'भेड़िया के नथुना घुमा देब' में सिद्धान्त-बेवहार के विसंगति, डेगे-डेग होत राजनीति आ रंगभेद, जातिभेद, भाषाई आ मजहबी झगड़न में लहूलुहान आमजन के तबाही अउर राजनीतिक साजिश के खुलासा भइल बा । बाकिर, कवि निराश नइखे । ऊ आज के जरूरत का ओर इशारा करत बा— **'इन्साफ के आसन होके / बहेवाली हवा / ओकरा ओर इशारा करता / जरूरत बा / कि कुछ साहसी शिकारी / भेड़िया के नथुना / ओने घुमा देव ।'**

जिनिगी के एगो जरूरी तीकछ आ जियतार पक्ष के कवि **'बदहाल बच्चा'** में बड़ा मार्मिकता का संगे उकेरले बा । जब टोला-पड़ोस में चोर-लफंगन-अपराधियन के जमावड़ा होखे, जब घर-परिवार में भुखमरी-अँलचारी के घटाटोप अन्हरिया होखे, भुलाइल-हेराइल लरिकपन होखे, त **'बदहाल बच्चा'** आखिर करो का ?

आज, जबकि चारू ओर आतंक के साया मँड़रा रहल बा, डरल-सहमल लरिकन के चुप्पी सभकरा चिन्ता के विषय होखे के चाही । अब कथा-कहानी में ना, बलुक सँचहू 'लकड़सुँघवा' आ 'हुँड़ार' उठा के ले जात बाड़न स लरिकन के आ ओह अबोध आँखिन में मासूमियत के जगहा दहशत के सियाही पोता जात बिया । **'लकड़बग्घा'** में एह कारुणिक दृश्य के झलक देखल जा सकेला ।

रोटी के फिराक में परदेस में जात, रेलगाड़ी में ठकचल मेहनतकश मजूरन के मनोदशा के बेबाक आ जीवन्त तस्वीर कवि के रचना **'जा रहल बा रेलगाड़ी'** में देखल जा सकेला । घर-गाँव के जानल-चीन्हल परिवेश के छोड़िके अबूझ संसार में बेपर के पँवरे के अलचारी, दुःख-तकलीफ आ घबाहिल जिनिगी में सुख आ सपनन के रेघारी अउर खाका खींचत एगो सहज आ मनोहारी रचना बा ई ।

पीड़ित के काव्य-संसार में गाँव-जवार के जहवाँ जानल-पहिचानल बिम्ब बाड़न स, उहँवे शहर-महानगरो के कशमकश आ असुरक्षित जिनिगी के मरम बेधेवाला प्रतीको के दर्शन होत बा । जनपक्षधरता कवि के पूंजी बा— चाहे ऊ उपेक्षित-बेबस बचपन होखे भा दबल-कुचल आमजन । निराश लोगनो में आस के शंखनाद करत, मरणासन्न में जिजीविषा के सुर फूंकत आ साहसिकता-विद्रोही तेवर के संकेत एह रचनन के महत्वपूर्ण बनावत बा । कतहीं-कतहीं भोजपुरी के खाँटी शब्दन के गंध ना मिलला पर अनूदित रचना के अहसास जरूर होत बा, बाकिर ई उहँवे लउकत बा, जहवाँ लोकोन्मुखता आ गीति-तत्व के पकड़ किछु ढील भइल बा । समकालीन कवितो में एकर गुंजाइश बनवले राखे के होई, तबे कविता मुकम्मल पाठ्य का संगे-संगे श्रव्यो बनल रही ।

चाहे गीत होखे भा समकालीन कविता— पीड़ितजी के कविता कथ्य, शिल्प आ संवेदना के स्तर पर कविताई से लैस बाड़ी स आ देश के हाशिया पर राखल दबाइल-कचराइल आमजन के नियति, सुख-दुःख, रोज जिए-मूवे के अलचारी, संघर्षशीलता के जीवंतता-मार्मिकता का संगे उकेरे में कवि के काफी हद तक कामयाबी मिलल बा । वैचारिक दृष्टिकोण आ सर्जनात्मकता के धार खास तौर पर सराहे-जोग बा । डॉ॰ पीड़ित के हार्दिक बधाई !

✪

www.bhojpurisahityangan.com

तैयब हुसैन 'पीड़ित' के छव गो कविता/गीत

कविता

[एक]

का अब

का अब कल्पना में मिली
साफ पानी ?
ताजा हवा ?
लोककथा में
नैतिक राजकुमार ?

का काल्ह केहू समझी
एतना बड़ धरती के
उपजाऊ बनावे में
अदना केंचुआ के मेहनत
अकिल के समुन्दर में
बून-भर सियाही के बिसात !

का झिंगुर के 'किर्र-किर्र'
आ चिड़ियन के 'चह-चह' से
साँझ-बिहान
के पहिचान होई ?
जब
ना होई करिया बोर्ड
ना उज्जर खल्ली
ना फुर्सते
कि मास्टर
खोज ले अइहन
लड़िकनो खातिर
शब्दन के कबाड़खाना से
इचिको-भर बाँचल
उनका पसन के चीज
छुट्टी ?

[दू]

का करीं

का करीं
जबकि समूचा दुनिया
ताकतवर बम के मर्जी पर बा
आ रिमोट कन्ट्रौल
खिलौना-सन पराया हाथ

जबकि
अकाल बा रोटी के
आ आपन
मेहनतो नइखे अपना साथ

जबकि
बँटत जा रहल बा आदमी
जात
धरम
आ भाषा संग
बारीक टुकड़न में

जबकि
ऊब मेटावे खातिर
हो रहल बा हत्या
मनोरंजन बदे बलात्कार

जबकि
अपनहीं बानी ना रहल नियर
आ तू त ओहू से कमतर

अइसना में सोचऽतानी
अपना प्रेम-पत्र के का करी ?

www.bhojpurisahityangan.com

[तीन]

भेड़िया के नथुना घुमा देव

कइसन अचरज के बात बा
कि चोर भीड़ में चोर ढूँढ़ रहल बा
पेटरउल से आग बुतावल जाता
आ परकटल कबूतर
आसमान में उड़ावल जाता
शांति खातिर !

कह ना सकीं
केतना कारगर होई
नारा, जुमला आ बेयानन के ई बइसाखी
लँगड़ात सद्भावना के
मंजिल तक पहुँचावे में
जबकि
राहो में
बारूदी सुरंग बिछावे के
साजिश जारी बा !

ऊ समुझताड़न
पालतू भेड़िया
पोसेवाला के ना मारे
आ भेड़िया
निडर होके सूँघ रहल बा
आदमी के माँस !
साफ जनाता

ओकर निशान
रंग, भाषा, जात, धरम
के झगड़ा
आ इराक-अमेरिका
के रगड़ा में,

बाकिर हमनी का
वोट आ सरकार
बहस आ सेमिनार में
ओकर ठौर तलासत
थाकत नइखीं ।

इन्साफ के आसनहोके
बहेवाली हवा
ओकरा ओर इशारा करता
जरूरत बा
कि कुछ साहसी शिकारी
भेड़िया के नथुना
ओने घुमा देव !

www.bhojpurisahityangan.com

[चार]

बदहाल बच्चा

(1)

फइल-फइल जा ताटे
तख्ती पर अच्छर
आ लउकत बा
गोल-गोल रोटी-सन
चकला पर
भूख से फुलात बा
सरसों-सन आँखिन में
मुर्गा बनल बानी
पढ़ीं कइसे
ठीक से ?

(2)

बाबू शराबी
भइया वहशी
जुआरी चाचा
चारू ओर
गाँव में
लफंगन के राज बा
सुनऽतानी
इहे हाल
देश से विदेश तक के
सोचीले
करीं केकर नकल
कि आवे अकल
आ ओइसन बना दीं
जइसन पोथी में
समाज बा !

(3)

नानी के कहानी
राजा-रानी
इयाद बा जबानी
अपने लड़कपन
बस भूल-भूल जाईला,
केतना रटवलन गुरू
शिव, राणा, गाँधी के
चाचा के गुलाब
अब कालीन में उगाईला !

www.bhojpurisahityangan.com

[पाँच]

लकड़बग्घा

मुन्ना अब
पतंग ना उड़ावे
ना ऊधम मचावेला
गुल्ली-डंडा में ।
'रेन-रेन गो अवे' भी
जोर-जोर से ना पढ़े
ना पड़ोसी अंकल के
टॉफी खातिर तंग करेला ।
साँझ होते घुसल चाहेला
माई के गोदी में
बिना डाँट के / गट-गट दूध
उतार लेवेला पेट में
ना लोरी
ना कहानी
ना बहिनन साथे शैतानी !
ओकर साथी
आवेलसन सहमल-सहमल
काने-कान
बतियावेल सन फुसुर-फुसुर
फेरु भाग जालसन
अपना-अपना घरे ।
अब ना रिगाव सन ऊ बुढ़वन के
ना सुरक्षित महसूस करेल सन
अपना पापा के भी पास
दादी डेरवावत त रहस
झूठ-मूठ कवनो हउआ से
उनको का पता
कि सचहूँ कवनो लकड़बग्घा
एह तरे
उठा ले जाई मुन्ना के ... !

[छव]

गीत

जा रहल बा रेलगाड़ी !
राग में दुख-दर्द गावत
धावइत सरपट बेचारी
जा रहल बा रेलगाड़ी !

राह बड़ुए कठिन अइसन
तेग के हो धार जइसन
अउर बाधा हर कदम पर
मरे के डर तबो कइसन
दूर बा मंजिल, लदल बा
जिन्दगी के बोझ भारी !

सुख तनी सा, ढेर दुख ही
बा सफर में साथ एकरा
तूरि के नाता न जाने
बा कहाँ ले जात ठिकरा
तन भले एह में, मगर मन
असम दिल्ली भा अगाड़ी !

छुटल घर आ गाँव पीछे
बहुत कुछ बा छुटल जाता
नदी-नाला, खेत, जंगल-
झाड़ ना अब कुछ चिन्हाता
सपन-चिरई उड़ल जाली
याद के खुलते पिटारी !

काल्ह से खत तार कहके
डाकखाना में डलाई
कम लिखाई बात, बाकिर
ढेर बूझे के कहाई
शहर के मेला में खोजी
मन हिरामन फेरु सवारी !

www.bhojpurisahityangan.com

एह अंक के रचनाकार

- **(डॉ॰) अशोक द्विवेदी** / 5
  47, टैगोरनगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001
- **ए॰ कुमार 'आँसू'** / 10
  द्वारा - स्व॰ अकलू राम, प्रभा निकेतन, मौलाबाग, आरा-802301
- **कन्हैया पाण्डेय** / 11
  2ए/298, आवास विकास कॉलोनी, हरपुर, बलिया-277001
- **जितेन्द्र कुमार** / 8
  मदनजी का हाता, पकड़ी चौक, आरा-802301
- **(डॉ॰) तैयब हुसैन 'पीड़ित'** / 15
  हिन्दी विभाग, जेड॰ ए॰ इस्लामिया कॉलेज, सीवान-841226
- **प्रकाश उदय** / 12
  प्रवक्ता हिन्दी, श्रीबलदेव पी॰ जी॰ कॉलेज, बड़ागाँव, वाराणसी-221204
- **बलभद्र** / 7
  ग्रा॰ योगीवीर, पो॰ कमरियाँव, जिला भोजपुर-802183
- **भगवती प्रसाद द्विवेदी** / 13
  पोस्ट बॉक्स 115, पटना-800001
- **मनोज कुमार सिंह 'भावुक'** / 10
  द्वारा शम्भूनाथ गुप्ता, गोसाईटोला रोड, पटना-800013
- **मुफ़लिस** / 10
  चौधरी टोला, डुमराँव- 802119
- **रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'** / 6
  शंकर भवन, सिविल लाइन्स, बक्सर
- **रिपुंजय निशान्त** / 7
  ऐडवोकेट, रामराज चौक, दहियावाँ, छपरा-841301
- **ललन प्रसाद पाण्डेय**
  बरडूबी बाजार, पो॰-हुगरीजान, जिला-तिनसुकिया, असम-786601
- **शारदानन्द प्रसाद** / 12
  श्री बाबूलाल चौधरी का मकान, पश्चिमी शिवपुरी, पटना-800023
- **श्रीराम सिंह 'उदय'** / 11
  बॉसडीह, बलिया-277202

✪

कविता के अंक 2, 3 आ 4 के प्रति उपलब्ध । हर प्रति के मूल्य 5/- रुपया ।

www.bhojpurisahityangan.com

'कविता'-प्रतिनिधि

डुमराँव : मुफ़लिस (चौधरी टोला)
बक्सर : रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' (शंकर भवन, सिविल लाइन्स)
आरा : जितेन्द्र कुमार (मदनजी का हाता, पकड़ी चौक)
पटना : मनोज कुमार सिंह 'भावुक' (गोसाईंटोला रोड)
मोतिहारी : कुमार अरुण (कार्यालय, जिला सहकारिता पदाधिकारी)
सीवान : डॉ॰ तैयब हुसैन 'पीड़ित' (जेड॰ ए॰ इस्लामिया कॉलेज)
तिनसुकिया : ललन प्रसाद पाण्डेय (बरडूबी बाजार, पो॰-हुगरीजान)

भोजपुरी के महत्वपूर्ण पुस्तक

1. सुरपंछी (गीत-संग्रह) /-रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' मूल्य 15/- रुपया
2. रेत के परछाँही (गजल-संग्रह) / 'पीयूष' मूल्य 21/- रुपया
3. थाती (लघुकथा-संग्रह) / भगवती प्रसाद द्विवेदी मूल्य 30/- रुपया
4. साँच के आँच (लघु उपन्यास) / भगवती प्रसाद द्विवेदी मूल्य 20/- रुपया
5. गजल के शिल्प-विधान / जगन्नाथ मूल्य 51/- रुपया
6. भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा / जगन्नाथ मूल्य 50/- रुपया
7. हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छन्द / जगन्नाथ मूल्य 50/- रुपया
8. पाँख सतरंगी (गीत-संग्रह) / जगन्नाथ मूल्य 25/- रुपया
9. लर मोतिन के (गजल-संग्रह) / जगन्नाथ मूल्य 14/- रुपया

भोजपुरी के अन्य पुस्तकन खातिर भी सम्पर्क करीं ।

भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान

श्याम भवन, एस॰ पी॰ सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड, पटना-1

उत्तम तथा आकर्षक छपाई के एकमात्र केन्द्र

स्वस्तिक प्रिन्ट

काजीपुर क्वार्टर्स रोड नं॰-4, पटना-800 004

TeleMark

Deals in : "TELEBOX P. C. O. Monitor", Telephone, Local Call Monitor, Conference, Fax.

Shyam Bhwan, S. P. Sinha Path, Boring Canal Road
Patna-800 001, Phone. : 201805, 220086

प्रकाशक 'भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान', बोरिंग कैनाल रोड, पटना-1 के ओर से जगन्नाथ द्वारा अनुकृति, बोरिंग कैनाल रोड, पटना-1 से कम्पोज्ड आ स्वस्तिक प्रिन्ट, काजीपुर, पटना-4 में मुद्रित । सम्पादक : जगन्नाथ